# SIDO KANHU MURMU UNIVERSITY DUMKA, JHARKHAND

## STUDY MATERIAL FOR U. G. SEM IV {SANSKRIT}

(पाठ्यांश – समास प्रकरण)

**By: Dr. D. K. Mishra**

# समास प्रकरण (सूत्र व्याख्या)

प्रस्तुति : डॉ धनंजय कुमार मिश्र

1. **चार्थे द्वन्द्वः** – प्रस्तुत सूत्र आचार्य पाणिनि रचित अष्टाध्यायी के द्वितीय अध्याय से उद्धृत द्वन्द्वसमास विधायक सूत्र है। सूत्र का शब्दार्थ है – चार्थे = 'च' अर्थ में, द्वन्द्वः = द्वन्द्व होता है। किन्तु इससे सूत्र का तात्पर्य स्पष्ट नहीं होता। सूत्र के स्पष्टीकरण के लिए अधिकार सूत्र 'प्राक्कडारात् समासः', 'सहसुपा' तथा 'अनेकमन्यपदार्थे' से 'अनेकम्' की अनुवृति करने पर सूत्र का भावार्थ होगा – ***"अनेकं सुबन्तं चार्थे वर्तमानं वा समस्यते, स द्वन्द्वः।"*** अर्थात् 'च' के अर्थ में वर्तमान अनेक सुबन्तों का परस्पर समास होता है और उस समास को द्वन्द्व कहते हैं।

   च के अर्थ चार प्रकार के हैं –(क) समुच्चय (ख) अन्वाचय (ग) इतरेतरयोग (घ) समाहार।

   यहाँ समुच्चय और अन्वाचय इन दो चार्थो में सामर्थ्य न होने के कारण समास नहीं होता है। शेष दो अर्थो (इतरेतरयोग और समाहार) में ही समास होता है।

   इस प्रकार इतरेतरयोग और समाहार अर्थ में वर्तमान अनेक सुबन्तों का परस्पर समास होता है और उस समास को द्वन्द्व समास कहते हैं। जैसे –

   *धवखदिरौ – धवश्च खदिरश्च (इतरेतरयोग अर्थ में)*

   *संज्ञापरिभाषम् – संज्ञा च परिभाषा च तयोः समाहारः (समाहार अर्थ में)*

2. **अनेकमन्यपदार्थे** – प्रस्तुत सूत्र आचार्य पाणिनि रचित अष्टाध्यायी के द्वितीय अध्याय से उद्धृत बहुब्रीहिःसमास विधायक सूत्र है। सूत्र का शब्दार्थ है – अन्यपदार्थे = अन्यपद के अर्थ में, अनेकम् = अनेक। किन्तु इससे सूत्र का तात्पर्य स्पष्ट नहीं होता। सूत्र के स्पष्टीकरण के लिए अधिकार सूत्र 'समर्थः पदविधिः', 'प्राक्कडारात् समासः', 'सहसुपा' तथा 'शेषो बहुब्रीहिः' से की अनुवृति करनी होगी।

अन्य पद का अर्थ है – समस्त पदों से भिन्न पद। इस प्रकार सूत्र का अर्थ है – 'अन्य पद के अर्थ में वर्तमान अनेक समर्थ सुबन्तों का परस्पर समास होता है और उस समास को बहुब्रीहि समास कहते हैं।

तात्पर्य है कि – समास में आए हुए पद यदि अपने अतिरिक्त किसी अन्य पद का बोध कराते हैं तो बहुब्रीहिः समास होता है। ***''अनेकं प्रथमान्तमन्यस्य पदस्यार्थे वर्तमानं वा समस्यते स बहुब्रीहिः।***

उदाहरण – पीताम्बरः।

यहाँ दो पद हैं – पीत (पीला) अम्बर (वस्त्र)। किन्तु यहाँ पीताम्बरः का प्रयोग श्रीकृष्ण के अर्थ में हुआ है जिनका वस्त्र पीला रहता है। श्रीकृष्ण पद समास में नहीं आया है, अतः वह अन्य पद है। अन्य पद का बोध कराने के कारण हीं 'पीताम्बरः' बहुब्रीहि–संज्ञक है।

3. **पञ्चमी भयेन :–** प्रस्तुत सूत्र आचार्य पाणिनि रचित अष्टाध्यायी के द्वितीय अध्याय से उद्धृत है। यह पंचमी तत्पुरुष समास विधायक सूत्र है।

सूत्र का शब्दार्थ है – पंचमी = पंचमी विभक्ति, भयेन = भय से।

सूत्र का भावार्थ जानने के लिए अधिकार सूत्र 'प्राक्कडारात् समासः', 'सहसुपा' तथा 'तत्पुरुषः' की अनुवृति करनी होगी।

सूत्र का भावार्थ होगा – ''पञ्चम्यन्त सुबन्त का भय प्रातिपदिक के साथ समास होता है और उस समास को तत्पुरुष समास कहते हैं।

जैसे – 'चौरात् भयम्' में पञ्चम्यन्त सुबन्त चौरात् का प्रातिपदिक भय के साथ समास होकर 'चौरभयम्' सामासिकपद बनता है।

4. **तृतीया तत्कृतार्थेन गुणवचनेन :–** प्रस्तुत सूत्र आचार्य पाणिनि रचित अष्टाध्यायी के द्वितीय अध्याय से उद्धृत है। यह तृतीया तत्पुरुष समास विधायक सूत्र है।

सूत्र का शब्दार्थ है – तृतीया = तृतीया विभक्ति,

तत्कृतार्थेन = तेन कृतम् – तत्कृतम् अर्थश्च इति तत्कृतार्थम्, तेन (उसके द्वारा किये गए और अर्थ),

गुणवचनेन = गुणवाचक से .....।

सूत्र का तात्पर्य स्पष्ट करने के लिए 'प्राक्कडारात् समासः', 'सहसुपा' तथा 'तत्पुरुषः' की अनुवृति करनी होगी। तत् का अभिप्राय सूत्रस्थ तृतीया से है।

इस प्रकार तत्कृतम् का अर्थ है – तृतीया के द्वारा किया हुआ। इसका अन्वय गुणवचनेन से होता है न कि अर्थेन से। 'प्रत्ययग्रहणे तदन्तग्रहणम्' परिभाषा से तृतीया में तदन्त विधि हो जाती है।

सूत्र का भावार्थ होगा – 'तृतीयान्तं तृतीयान्तार्थकृत–गुणवचनेनार्थेन च सह वा प्राग्वत्।' अर्थात् तृतीयान्त सुबन्त का उसके द्वारा किये गये गुणवाची प्रातिपदिक के सुबन्त और अर्थ प्रातिपदिक के सुबन्त के साथ समास होता है और इस समास को तत्पुरुष समास कहते हैं।

जैसे – शङ्कुलया खण्डः – शङ्कुलाखण्डः। धान्येन अर्थः – धान्यार्थः।

5. **प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्** (1/2/43) :– प्रस्तुत सूत्र महर्षि पाणिनि रचित अष्टाध्यायी के प्रथम अध्याय के द्वितीय पाद से उद्धृत है। यह संज्ञा सूत्र है।

सूत्र का शब्दार्थ है –

समास – समास इति समासविधायिशास्त्रं गृह्यते।

प्रथमानिर्दिष्टं – प्रथमया निर्दिष्टं इति प्रथमानिर्दिष्टम्।

{समासे = समास शास्त्र में, प्रथमानिर्दिष्टं = प्रथमा विभक्ति से निर्दिष्ट, उपसर्जनम् = उपसर्जन कहलाता है।}

वृत्ति है – ***''समासशास्त्रे प्रथमानिर्दिष्टमुपसर्जनसंज्ञं स्यात्।''*** अर्थात् – ''समास विधान करने वाले सूत्रों में प्रथमा विभक्ति से जिस पद का निर्देश किया जाता है उसे उपसर्जन कहते हैं।''

जैसे – समास विधायक सूत्र – अव्ययं विभक्ति....0 में अव्ययम् पद प्रथमान्त है इसलिए प्रस्तुत सूत्र से वह उपसर्जन संज्ञक होगा। इसी प्रकार 'हरि ङि अधि' में 'अधि' अव्यय है, अतः वह भी उपसर्जन है।

6. **उपसर्जनम् पूर्वम्** :– प्रस्तुत सूत्र महर्षि पाणिनि रचित अष्टाध्यायी के द्वितीय अध्याय के द्वितीय पाद से उद्धृत है।

इसकी वृति है – ***"समासे उपसर्जनम् प्राक् प्रयोज्यम्।"***

अर्थात् समास में उपसर्जन संज्ञक शब्द को पहले रखना चाहिए।

सूत्र का भावार्थ है कि विग्रहवाक्य में जिसे उपसर्जन कहा गया है वह समास में प्रथम अवयव बनता है।

जैसे – 'अधिहरि' का अलौकिक विग्रह है – 'हरि ङि अधि।'

यहाँ *'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्'* से अधि की उपसर्जन संज्ञा है अतएव प्रस्तुत सूत्र से अधि का पूर्व प्रयोग होकर अधिहरि रूप बनेगा।

7. **गोस्त्रियोरूपसर्जनस्य** :– प्रस्तुत सूत्र महर्षि पाणिनि रचित अष्टाध्यायी के प्रथम अध्याय के द्वितीय पाद से उद्धृत है।

इसकी वृत्ति है – ***"उपसर्जनं यो गो शब्दः स्त्रीप्रत्ययान्तं च तदन्यस्य प्रातिपदिकस्य ह्रस्वः स्यात्। अव्ययीभावश्च इत्यव्ययत्वम्।"***

अर्थात् – जिस प्रातिपदिक के अन्त में उपसर्जन संज्ञक गोशब्द अथवा उपसर्जन संज्ञक कोई स्त्रीप्रत्ययान्त शब्द हो उस शब्द के अन्त्य स्वर को ह्रस्व हो जाता है। 'अव्ययीभावश्च' इस सूत्र से इसकी अव्ययसंज्ञा होती है। ***उदाहरण – चित्रगुः और अतिमालः।***

चित्रगुः – चित्राः गावः (लौकिक विग्रह), चित्र जस् गो जस् (अलौकिक विग्रह)। यहाँ गावः पद की विग्रह में सदा नियतविभक्तिक होने के कारण उपसर्जन संज्ञा होती है। अलौकिक विग्रह में प्रकृत सूत्र से उपसर्जनसंज्ञक गो को ह्रस्व होकर चित्रगुः रूप बनता है। इसी प्रकार 'अतिक्रान्तो मालाम्' में मालाम् पद की उपसर्जन संज्ञा तथा प्रस्तुत

सूत्र से अलौकिकविग्रह 'अति सु माला अम्' में उपसर्जन संज्ञक स्त्रीप्रत्ययान्त 'माला' के अन्त्य आकार को ह्रस्व होकर 'अतिमालः' रूप बनता है।

8. **विशेषणं विशेष्येण बहुलम्** – प्रस्तुत सूत्र महर्षि पाणिनि रचित अष्टाध्यायी के द्वितीय अध्याय से उद्धृत है।

सूत्र का शब्दार्थ है – विशेषणं = विशेषण,

विशेष्येण = विशेष्य से,

बहुलम् = बहुल करके।

सूत्र के स्पष्टीकरण के लिए – 'प्राक्कडारात् समासः', 'सह सुपा' और 'तत्पुरूषः' की अनुवृत्ति करते हैं। साथ हीं ***''पूर्वकालैकसर्वजरत्पुराणनवकेवलाः समानाधिकरणेन''*** सूत्र से 'समानाधिकरणेन' की भी अनुवृत्ति करनी पड़ती है। सूत्र का भावार्थ है – विशेषणवाची सुबन्त का समानाधिकरण वाले विशेष्यवाची सुबन्त के साथ बहुलता से समास होता है। ***भेदकं समानाधिकरणेन भेद्येन बहुलं प्राग्वत्।*** विशेषण और विशेष्य में समास में विशेषण पहले आता है क्योंकि समासशास्त्र में विशेषण पद प्रथमान्त है।

जैसे – नीलं उत्पलम् = नीलोत्पलम्।

कृष्णः सर्पः = कृष्णसर्पः।

सूत्र में बहुलम् कहा गया है अतः कहीं समास होता है कहीं नहीं।

जैसे – ''***रामो जामदग्न्यः***'' में समास नहीं होता है।

9. **उपमानानि सामान्यवचनैः** – प्रस्तुत सूत्र महर्षि पाणिनि रचित अष्टाध्यायी से उद्धृत है। सूत्र का शब्दार्थ है –

उपमानानि = उपमान,

सामान्यवचनेः = सामान्यवाचक (उपमेय) से।

सूत्र के स्पष्टीकरण के लिए – 'प्राक्कडारात् समासः', 'सह सुपा' और 'तत्पुरूषः' की अनुवृत्ति करते हैं।

सूत्र का भावार्थ होगा – उपमानवाचक सुबन्त का साधारणणर्मवाचक (उपमेय) सुबन्त के साथ समास होता है और उस समास को तत्पुरुष कहते हैं।

जैसे – 'घन इव श्यामः' (मेघ के समान श्याम वर्ण वाला) में 'घन' उपमान है और 'श्याम' उपमेय।

अतः प्रस्तुत सूत्र से 'घन सु' और 'श्याम सु' में समास होकर 'घनश्यामः' रूप बनता है।

यहाँ 'घन इव श्यामः' में पूर्वपद 'घन' का लक्षणा से 'घनसदृश' अर्थ सूचित करने के लिए भी लौकिक विग्रह में 'इव' शब्द प्रयुक्त हुआ है। यह सूत्र समस्त पदों में किसका पूर्व निपात हो यह भी नियत करता है।

सूत्र में 'उपमानानि' प्रथमान्त है, अतः उपसर्जन संज्ञा होकर उसका पूर्व प्रयोग होता है।

10. **न निर्धारणे** :– प्रस्तुत सूत्र महर्षि पाणिनि रचित अष्टाध्यायी के द्वितीय अध्याय के द्वितीय पाद से उद्धृत है।

इसकी वृति है – निर्धारणे या षष्ठी सा न समस्यते। अर्थात् – निर्धारण अर्थ में जिस षष्ठी का विधान हुआ है उसका समास नहीं होता। जैसे – 'नृणां द्विजः श्रेष्ठः' {मनुष्यों में ब्राह्मण श्रेष्ठ है।}

11. **प्राक्डारात् समासः** :– प्रस्तुत सूत्र महर्षि पाणिनि रचित अष्टाध्यायी के द्वितीय अध्याय के प्रथम पाद का तृतीय सूत्र है। यह अधिकार सूत्र है। शब्दार्थ है –

कडारात् = कडार से

प्राक् = पहले तक

समासः = समास होता है।

वृत्ति है – ***'कडाराः कर्मधारये' इत्यतः प्राक् समास इत्यधिक्रियते।***

कडार का प्रयोग ***'कडाराः कर्मधारये'*** सूत्र में मिलता है। उससे पहले ***''वाऽऽहिताग्न्यादिषु''*** तक सभी सूत्र समास का विधान करते हैं।

**12. तृतीया सप्तम्योर्बहुलम् :–** प्रस्तुत सूत्र महर्षि पाणिनि रचित अष्टाध्यायी के द्वितीय अध्याय के चतुर्थ पाद से उद्धृत है। सूत्र का शब्दार्थ है –

तृतीया–सप्तम्योः = तृतीया और सप्तमी के स्थान पर

बहुलम् = बहुल होता है।

सूत्र का अर्थ जानने के लिए ''नाव्ययीभावाऽदतोपञ्चम्याः'' इस सूत्र से **'अतः'** और ''अव्ययीभावाद्'' इस सूत्र से **'अम्'** की अनुवृति करनी होगी। तब सूत्र की वृति होगी – ***''अदन्तादव्ययीभावात्तृतीयासप्तम्योर्बहुलमम्भावः स्यात्।''***

अर्थात् अकारान्त अव्ययीभाव के पश्चात् तृतीया (टा) और सप्तमी (ङि) विभक्ति के स्थान पर बहुलता से अम् आदेश होता है। तात्पर्य है कि कभी अम् आदेश होता है कभी नहीं भी होता है। जैसे – उपकृष्णम् (अम् पक्ष में),उपकृष्णे (अभाव पक्ष में)।

**13. द्वितीया श्रितातीत–पतित–गतात्यस्त–प्राप्तापन्नैः :–** प्रस्तुत सूत्र महर्षि पाणिनि रचित अष्टाध्यायी के द्वितीय अध्याय से उद्धृत है।

सूत्र का शब्दार्थ है – *द्वितीया = द्वितीया विभक्ति*

*श्रितातीत–पतित–गतात्यस्त–प्राप्तापन्नैः = श्रित, अतीत, पतित, गत, अत्यस्त,प्राप्त, और आपन्न से।*

किन्तु क्या होता है यह स्पष्ट नहीं होता। इसलिए सूत्र के स्पष्टीकरण के लिए – **'प्राक्कडारात् समासः', 'सह सुपा'** तथा **'तत्पुरूषः'** की अनुवृत्ति करनी होगी।

तब वृत्ति होगी – ***''द्वितीयान्तं श्रितादिप्रकृतिकैः सुबन्तैः सह समस्यते वा, स च तत्पुरूषः।''***

अर्थात् द्वितीयान्त सुबन्त का श्रित, अतीत, पतित, गत, अत्यस्त,प्राप्त, और आपन्न इन सात प्रातिपदिकों से बने हुए सुबन्त के साथ समास होता है और उस समास को तत्पुरुष कहते हैं। जैसे–

कृष्णम् श्रितः = कृष्णश्रितः

दुःखम् अतीतः = दुःखातीतः

कूपम् पतितः = कूपपतितः

स्वर्गं गतः = स्वर्गगतः

कूपम् अत्यस्तः = कूपमत्यस्तः

सुखम् प्राप्तः = सुखप्राप्तः

संकटम् आपन्नः = संकटमापन्नः।

**14. अत्यन्तसंयोगे च :–** प्रस्तुत सूत्र महर्षि पाणिनि रचित अष्टाध्यायी के द्वितीय अध्याय के प्रथम पाद से उद्धृत है।

वृत्ति है – 'कालाः' इत्येव। अक्तान्तार्थं वचनम्। मुहूर्तं सुखं मुहूर्तसुखम्।

अर्थात् – अत्यन्तसंयोग अर्थात् निकटतम संयोग सम्बन्ध में कालवाची द्वितीयान्त पद का सुबन्त के साथ समास होता है। इस सूत्र से विहित समास में सुबन्त पद का क्लान्त नहीं होना चाहिए। जैसे – मुहूर्तसुखम्।

''मुहूर्तसुखम्'' इस पद का लौकिक विग्रह है – मुहूर्तं सुखम्।

अलौकिक विग्रह है – मुहूर्त अम् सुख सु।

यहाँ मुहूर्त और सुख का अत्यन्त संयोग होने से प्रस्तुत ''**अत्यन्तसंयोगे च''** सूत्र से समास। कृत्तद्धितसमासाश्च से प्रातिपदिक संज्ञा, सुपो धातु0 से सुप् लोप – मुहूर्त सुख। *'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्'* से मुहूर्त की उपसर्जन संज्ञा, 'उपसर्जनं पूर्वम्' पूर्व प्रयोग – मुहूर्त सुख। स्वौजसमौट0 से सु। मुहूर्त सुख सु, स नपुंसकम् से नपुंसक संज्ञा, अतोऽम् से अम्, अमिपूर्वः से पूर्वरूप होकर ''मुहूर्तसुखम्'' रूप सिद्ध होता है।

**15. नाव्ययीभावादतोऽम् त्वपञ्चम्याः :–** प्रस्तुत सूत्र महर्षि पाणिनि रचित अष्टाध्यायी के द्वितीय अध्याय के चतुर्थ पाद से उद्धृत है।

सूत्र का शब्दार्थ है –

अतः = अदन्त,

अव्ययीभावात् = अव्ययीभाव से पर .....,

न = नहीं होता है,

तु = किन्तु,

अपञ्चम्याः = पंचमी विभक्ति को छोड़कर अन्य विभक्ति से परे .....,

अम् = अम् होता है।

किन्तु इससे सूत्र का तात्पर्य स्पष्ट नहीं होता। सूत्र के स्पष्टीकरण के लिए ***'अव्ययादाप्सुपः'*** से सुपः तथा ***''ण्यक्षत्रियार्षञितो यूनि लुगणिञोः'*** से लुक् की अनुवृत्ति होती है।

वृत्ति है – ***''अदन्तादव्ययीभावात्सुपां न लुक् तस्य पञ्चमीं विना अमादेशः स्यात्।''***

इस प्रकार सूत्र का भावार्थ होगा – अकारान्त अव्ययीभाव के पश्चात् **'सुप्'** का लुक् (लोप) नहीं होता है किन्तु पञ्चमी को छोड़कर अन्य विभक्तियों के बाद 'सुप्' के स्थान पर **'अम्'** आदेश हो जाता है। जैसे – 'अधिगोप सु' में इसी सूत्र से 'सु' के स्थान पर 'अम्' होकर 'अधिगोप अम्' बनता है। फिर **'अमिपूर्वः'** सूत्र से पूर्वरूप होकर 'अधिगोपम्' रूप सिद्ध होता है।

**********

# साधनिका / रूपसिद्धि

1. भूतपूर्वः – इसका लौकिक विग्रह है – पूर्वं भूतः। अलौकिक विग्रह है – पूर्व अम् भूत सु। यहाँ **'सहसुपा'** सूत्र से पूर्वम् सुबन्त पद का 'भूतः' इस सुबन्त पद के साथ समास।**'कृत्तद्धितसमासाश्च'** सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा तथा सुपोधातु.....0 से सुप् का लोप होकर – पूर्वभूत। **'भूतपूर्वे चरट्'** सूत्र के प्रमाण्य से भूत शब्द का पूर्वनिपात होकर – भूतपूर्व। **'एकदेशविकृतमनन्यवत्'** इस न्याय से पुनः भूतपूर्व की प्रातिपदिक संज्ञा। **'स्वौज समौट.....0'** से सु प्रत्यय – भूतपूर्व सु। **उपदेशेऽजनुनासिक इत्'** से सु के उकार की इत्संज्ञा, तस्य लोपः से लोप होकर, – भूतपूर्व स्। **'स सजुषो रूः'** से स् को रू – भूतपूर्व रू। पुनः इत्संज्ञा और लोप – भूतपूर्व र्। **''खरवसानयोर्विसर्जनीयः''** सूत्र से र् को विसर्ग (:) होकर भूतपूर्वः रूप सिद्ध होता है।
2. अधिहरि :– इसका लौकिक विग्रह है – हरौ इति। अलौकिक विग्रह है – हरि ङि अधि। यहाँ – **''अव्ययंविभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्धयर्थाभावत्ययाांप्रतिशब्दप्रादुर्भाव–पश्चाद्यथाऽऽनुपूर्व्य यौगपद्यसाद्श्यसम्पत्तिसाकल्यान्त वचनेषु''** सूत्र से सप्तमी विभक्ति के अर्थ में अधि अव्यय का हरि के साथ समास। **'कृत्तद्धितसमासाश्च'** सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा तथा **सुपोधातु.....0** से सुप् 'ङि' का लोप होकर – हरि अधि। **अव्ययं विभक्ति.....0** इस सूत्र में अव्ययं के प्रथमानिर्दिष्ट होने से **प्रथमानिर्दिष्टं.....0** सूत्र से अव्यय 'अधि' की उपसर्जन संज्ञा। **'उपसर्जनं पूर्वम्'** से उपसर्जन संज्ञक अधि का पूर्व प्रयोग – अधिहरि। **'एकदेशविकृतमनन्यवत्'** इस न्याय से पुनः अधिहरि की प्रातिपदिक संज्ञा। **'स्वौज समौट.....0'** से सु प्रत्यय – अधिहरि सु।**अव्ययीभावश्च** से अव्यय संज्ञा, **अव्ययादाप्सुपः** से सुप् का लोप होकर अधिहरि रूप सिद्ध होता है।
3. उपशरदम् :– ''शरदः समीपम्'' इस लौकिक विग्रह तथा ''शरद् ङस् उप'' इस अलौकिक विग्रह से – अव्ययं विभक्ति....0 सूत्र से सामीप्य अर्थ में वर्त्तमान उप अव्यय का शरदः सुबन्त के साथ समास। **'कृत्तद्धितसमासाश्च'** सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा तथा **सुपोधातुप्रातिपदिकयोः** से सुप् 'ङस्' का लोप होकर – शरद् उप।**''प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्''** सूत्र से उप की उपसर्जन संज्ञा। उपसर्जनं पूर्वम् सूत्र से उप का पूर्व

प्रयोग होकर, उप शरद् ।**अव्ययीभावेशरत्प्रभृतिभ्यः'' सूत्र से समासान्त टच् (अ) – उप शरद् अ। 'एकदेशविकृतमनन्यवत्'** इस न्याय से पुनः उपशरद् अ की प्रातिपदिक संज्ञा। **'स्वौज समौट.....0'** से सु प्रत्यय –उपशरद् अ सु। अव्ययीभावश्च से अव्यय संज्ञा। अव्ययादाप्सुपः से सु को लोप प्राप्त था किन्तु ''नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः सूत्र से सु को अम् – उपशरद् अ अम्। अमिपूर्वः से अम् के अ को पूर्वरूप होकर – उपशरद् अम् = उपशरदम् रूप सिद्ध होता है।

4. हरित्रातः – लौकिक विग्रह – हरिणा त्रातः

अलौकिक विग्रह – हरि टा त्रात सु।

*'कर्तृकरणेकृताबहुलम्'* सूत्र से कृदन्त त्रात का कर्तृपद हरि के साथ समास। *कृत्तद्धितसमासाश्च* सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा, *सुपोधातुप्रातिपदिकयोः* से सुप् का लोप,

हरि त्रात

*प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्* से हरि की उपसर्जन संज्ञा, उपसर्जनम् पूर्वम् से पूर्व प्रयोग

हरि त्रात

एकदेशविकृतमननयवत् न्याय से प्रातिपदिक संज्ञा, स्वौजसमौट. से सु

हरित्रात सु

*उपदेशेऽजनुनासिक इत्* से सु के उ की इत्संज्ञा, *तस्य लोपः* से लोप

हरित्रात स्

*स सजुषो रूः* से स् को रू आदेश

हरित्रात रू

*उपदेशेऽजनुनासिक इत्* से उ की इत्संज्ञा, तस्य लोपः से लोप

हरित्रात र्

*खरवसानयोर्विसर्जनीयः* से र् को विसर्गादेश होकर

***हरित्रातः*** रूप सिद्ध होता है।

5. राजपुरुषः :– राज्ञः पुरूषः इस लौकिक विग्रह तथा राजन् ङस् पुरूष सु इस अलौकिक विग्रह से षष्ठी सूत्र से षष्ठ्यन्त राजन् का पुरूष के साथ समास। *कृत्तद्धितसमासाश्च* सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा, *सुपोधातुप्रातिपदिकयोः* से सुप् (ङस् और सु) का लोप होकर, राजन् पुरूष। *प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्* से राजन् की उपसर्जन संज्ञा, उपसर्जनम् पूर्वम् से पूर्व प्रयोग – राजन् पुरूष। न लोपः प्रातिपदिकान्तस्य सूत्र से राजन् के न् का लोप होकर – राजनुरूष। पुनः *कृत्तद्धितसमासाश्च* सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा। स्वौजसमौट. से सु राजपुरूष सु *उपदेशेऽजनुनासिक इत्* से सु के उ की इत्संज्ञा, *तस्य लोपः* से लोप राजपुरूष स् *स सजुषो रूः* से स् को रू आदेश राजपुरूष रू *उपदेशेऽजनुनासिक इत्* से उ की इत्संज्ञा, तस्य लोपः से लोप राजपुरूष र् *खरवसानयोर्विसर्जनीयः* से र् को विसर्गादेश होकर ***राजपुरूषः*** रूप सिद्ध होता है।

6. यूपदारू – यूपाय दारू इस लौकिक विग्रह तथा यूप ङे दारू सु इस अलौकिक विग्रह से **चतुर्थीतदार्थार्थबलिहितसुखरक्षितैः** सूत्र से दारू शब्द का चतुर्थ्यन्त यूप के साथ समास। *कृत्तद्धितसमासाश्च* सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा, *सुपोधातुप्रातिपदिकयोः* से सुप् (ङे और सु) का लोप होकर, यूपदारू। *प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्* से यूप की उपसर्जन संज्ञा, उपसर्जनम् पूर्वम् से पूर्व प्रयोग – यूप दारू। स्वौजसमौट. से सु प्रत्यय – यूपदारू सु। ***स्वमोर्नपुंसकात्*** सूत्र से सु प्रत्यय का लोप होकर – यूपदारू रूप सिद्ध होता है।

**********